lundi 21 novembre 2011

HIN3A13a

(Expression orale)

Cours-7

Comment l'homme détruit-il la nature ? Pourquoi le respect de l'environnement est-elle devenue une nécessité ? Quel principe et valeurs sont évoqués pour la protection de la nature.

अहिंसा में निहित implicite है पर्यावरण (m) environnement की सुरक्षा (f) protection

पर्यावरण आज विश्व की गम्भीर sérieux समस्या हो गई है। प्रकृति को बचाना अब हमारी ज्वलंत brûlant प्राथमिकता (f) priorité है। लेकिन प्राकृतिक सन्तुलन (m) équilibre को विकृत défiguré करने में स्वयं मानव का ही हाथ है। पर्यावरण और प्रदूषण (m) pollution मानव की पैदा की हुई समस्या है। प्रारम्भ (m) début में पृथ्वी घने वनों से भरी थी। लेकिन जनसंख्या वृद्धि (f) croissance और मनुष्य के सुविधाभोगी मानस (m) esprit ने, बसाहट (f) implantation, खेती-बाडी आदि के लिए वनों की कटाई शुरू की। औद्योगिकीकरण (m) industrialisation के दौर में मानव नें पर्यावरण को पूरी तरह अनदेखा ignorer कर दिया। जीवों के आश्रय स्थल (m) havre उजाड़ démolir दिए गये। न केवल वन सम्पदा (f) richesse और जैव सम्पदा का विनाश (m) destruction किया, बल्कि मानव नें जल और वायु को भी प्रदूषित कर दिया। कभी ईंधन (m) combustible के नाम पर तो कभी इमारतों के नाम पर। कभी खेती के नाम पर तो कभी जनसुविधा के नाम पर, मानव प्राकृतिक संसाधनो (m) ressources का विनाशक qui détruit दोहन (m) exploitation करता रहा।

वन सम्पदा में पशु-पक्षी आदि, प्राकृतिक सन्तुलन के अभिन्न indissociable अंग होते है। प्रकृति की एक समग्र entier जैव व्यवस्था होती है। उसमें मानव का स्वार्थपूर्ण intéressé दखल (m) intervention पूरी व्यवस्था को विचलित déranger कर देता है। मनुष्य को कोई अधिकार नहीं प्रकृति की उस व्यवस्था को अपने स्वाद, सुविधा और सुन्दरता के लिए खण्डित mutiler कर दे। अप्राकृतिक रूप से जब इस कड़ी को खण्डित करने का दुष्कर्म (m) viol होता है, प्रकृति में विनाशक विकृति उत्पन्न होती है जो अन्ततः en fin स्वयं मानव अस्तित्व (m) existence के लिए ही चुनौती (f) défi बन खड़ी हो जाती है। जीव-जन्तु हमारी ही भांति इस प्रकृति के आयोजन-नियोजन (m) programmation-planning का अटूट intègre हिस्सा (m) partie होते है। वे पूरे सिस्टम को आधार (m) appui प्रदान करते है। प्रकृति पर केवल मानव का मालिकाना du propriétaire हक़ (m) droit नहीं है। मानव को समस्त प्रकृति के संरक्षण (m) garde की शर्तों (f) conditions के साथ ही अतिरिक्त complémentaire उपयोग (m) utilisation बुद्धि मिली है। मानव पर, प्रकृति के नियंत्रित contrôlé उपयोगार्थ विधानों का आरोपण (m) imposition किया गया है, जिसे हम धर्मोपदेश के नाम से जानते है। वे शर्तें और विधान, यह सुनिश्चित करते है कि सुख सभी को समान रूप से उपलब्ध disponible रहे।

इसीलिए विश्व के सभी धर्मों के प्रणेता (m) fondateur व महापुरूष, हिंसा, क्रूरता (f) cruauté, जीवों को अकारण कष्ट व पीड़ा देने को गुनाह (m) crime कहते है। वे प्रकृति के संसाधनों के मर्यादित décent उपभोग (m) consommation की सलाह (f) conseil देते है। अपरिग्रह (m) le principe de ne pas accepter plus que ce dont on a besoin का उपदेश देते है। मन वचन काया (f) corps से संयमित contrôlé, अनुशासित रहने की प्रेरणा (f) inspiration देते है। इसी भावना से वे प्राणी मात्र में अपनी आत्मा सम similaire à झलक (f) aperçu देखते/दिखलाते है। जब वे कण कण (m) particule में भगवान होने की बात करते है, तो अहिंसा का ही आशय (m) sens, intention होता है । सभी को सुख प्रदान करने के उद्देश्य से ही वे यह सूत्र देते है कि 'आत्मा सो परमात्मा' या हर जीव में परमात्मा का अंश होता है। यह भी कहा जाता है कि सभी को ईश्वर नें पैदा किया अतः सभी जीव ईश्वर की सन्तान (f) progéniture है। इसीलिए जीव-जन्तु, पशु-पक्षियों के साथ दया, करूणा का व्यवहार करनें की शिक्षा दी जाती है। सारी बुराईयां किसी न किसी के लिए पीड़ादायक हिंसा बनती है। अतः सभी सद्गुणों को अहिंसा में समाहित consolider किया जा सकता है। यही धर्म है। यही प्रकृति का धर्म है। यही सुनियोजित जीवन का विधान (m) règlement है। अर्थात्, अहिंसा पर्यावरण का संरक्षण विधान है।